सश्रद्ध स्मरणांजलि

परिवार के आदरणीय व स्नेही
स्वर्गीय सदस्यगण को सादर नमन्
जिनके सम्बल ने हमेशा हमें प्रेरणा प्रदान की है
मैं उन सभी की मधुर स्मृति में
यह लघु पुस्तिका सादर समर्पित करता हूँ।

सश्रद्ध स्मरणांजलि

FOREWARD

I deem it a great privilege for me to write a few words on the publication of a book authoured by Justice Nagendra Kumar Jain. In fact the book is a precious collection of valuable quotations pearls of wisdom and maxims uttered and expressed by great men of wisdom. It is a happy experience that he has also incorporated in the book the valuable quotations of his own near and dear ones from whom he learnt a lot in his life.

Justice Jain believes in No one is too old to learn. No one too knowledgeable to learn. Justice Jain ever had and still has the rare virtue of sportsmanship. He believes in team spirit. He himself has ever been and still is an excellent sportsman with a number of rewards and distinctive recognition to his credit.

Even after his retirement and despite his ascending age he is not a spent force. He doesn't sit idle but keeps on doing some or the other for the benefit of the individual and society for that matter. This book is an endeavor in this very direction. Earlier also he took up such endeavors. In Memoriams he dedicates to the memory of his near and dear ones a couple of books.

I fervently believe and hope that the book will receive by the readers with open arms and it will be avidly read by them.

I congratulate and bless Justice Jain for this book of great social utility. I wish the book a grand Publication.

Dr. Narendra Sharma 'Kusum'
9414829376

विनम्र निवेदन

प्रभु की असीम अनुकंपा से मैनें जैन धर्म को जानने व मानने वाले जैन परिवार में जन्म लिया। दादी व माताजी रिचवल्स (प्रक्रिया) के अलावा वो जैन धर्म के सिद्धान्तों का पालन भी करते थे, पर मैं केवल मूल सिद्धान्त अहिंसा परमो धर्म, जीयो और जीने दो' व अपने कर्तव्य निर्वहन के बारे में ही जान पाया व कोशिश की वो नैतिक मूल्य, आचरण, व्यवहार व सामाजिक उत्तरदायित्व में भी दिखाई दें।

मेरे बचपन में मुझे अपनी दादी व अम्मा (माता) का बहुत सानिध्य प्राप्त हुआ। दादी से रोजाना रात में बड़ी उम्र तक कहानी सुना करता था वैसे सभी छोटे भाई बहिन सुनते थे। कहानी के दौरान मेरे सोने पर नाराज भी होती थी, कि बीच में ही छोड़ गया, पर धर्म कभी मत छोड़ना की हिदायत देती थी। मैनें अच्छे संस्कार घर के हर एक बड़ों से, अपने ताऊजी, कजन ब्रदर्स, डॉ. टी. पी. जैन, प्रो. एस.पी. जैन व मित्र सैन, हरप्रसाद मामा व धर्मपाल जैन, सुशीला भाभी अन्य बहुत लोगों से प्राप्त किए क्योंकि हर एक में कोई ना कोई अच्छाई/खुबी (**Quality**) होती है।

इसके अलावा मैं 12 वर्ष की उम्र से ही बैडमिंटन अपने पड़ोसी साथी ब्रजेश माथुर के साथ अच्छा खेलने लग गया था। खेलने की वजह से कई अच्छे सीनियर खिलाड़ियों, जिनसे मैं हारता था, उनकी खेल की अच्छी क्वालिटी जैसे:- ज्यादा स्टेमिना होना, बैकहैण्ड व फोरहैण्ड, कोर्ट काफ्ट, अच्छे शोर्ट व अच्छे बैकहैण्डं, रिस्टवर्क व टेम्परामेंन्ट (स्वभाव) से खेलना। उनका पाजिटिवनेस समभाव व ज्यादा मनोबल आदि टेक्निक को देखकर सीखकर व अपने में ढालकर अपनी कमजोरियों को दूर कर अपने खेल को इम्प्रूव किया फिर उनको हराया भी व इसी तरह हर एक की अच्छी बातों को इनबाईब (आत्मसात) करने की आदत सी बन गई थी। जिससे मुझे अपने कैरियर में बहुत फायदा मिला, सिखना एक सतत् प्रक्रिया है दूसरों से सीखने की प्रवृति मुझे आज तक काम आ रही है।

इसी वजह से मेरे अपने परिवारजनों, रिश्तेदारों, दोस्तों, वेलविशर व अन्य की अच्छी बातों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास किया। मैंने अन्य लोगों के अलावा अपनी स्व. दादी, माताजी-पिताजी, भाई-बहिन, सासू माँ-ससुर सा, को-ब्रदर्स व साले साहब जो आज हमारे बीच में नहीं हैं, के अच्छे विचारों को अपने जीवन में सदैव आत्मसात करने का प्रयास किया।

डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' ने सुझाया कि आपने बहुत अच्छे कोटेशन्स एकत्रित कर रखे है। क्यों नहीं एक लघु पुस्तिका का प्रकाशन आपके द्वारा लोगों के हितार्थ किया जाना चाहिये। उनकी इसी महत्वपूर्ण राय को ध्यान में रखते हुए मैनें माकूल कोटेशन ज्वेल्स ऑफ विजडम/विवेकरत्नावली व मेरे परिवारजन जो देवलोक हो चुके है। उनके विचारों के साथ एक लघु पुस्तिका का प्रकाशन कर उनको समर्पित कर रहा हूं। जिसमें कुछ रिश्तेदारों, दोस्तों व जस्टिस बनवारी लाल शर्मा, प्रो. सतीशचन्द्र शास्त्री, प्रो. बी.डी. रावत, आचार्य नन्दकिशोर, वी.के. खरे, रोहित जैन, ओमप्रकाश पालीवाल, एच.सी. गणेशिया आदि का सहयोग मिला। मैं इन सभी आत्मजनों का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। यह लघु पुस्तिका का प्रकाशन करवाकर मुझे आनन्द की भी बहुत अनुभूति हो रही है।

डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' जिन्होंने फारवर्ड नोट तैयार किया, का में हृदय से आभारी हूँ। इस पुस्तिका की छपाई के लिए मैं जैना प्रिन्टर्स के मालिक श्री अजय शाह व प्रुफ रिडर अंग्रेजी व हिन्दी के लिए तान्या जैन व सोनू जैन का भी बहुत आभार व्यक्त करता हूँ। पुस्तिका में किसी भी प्रकार की गलती के लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि मेरे इस छोटे से प्रयास से इस पुस्तिका को पढ़कर लोग अवश्य लाभान्वित होगें।

न्यायमूर्ति नगेन्द्र कुमार जैन
Mo.: 9414066665

दि. 11.1.2026

आज हमारे निम्न परिवारजन ब्रह्मलीन हो चुके हैं, लेकिन उनके विचार आज भी महत्वपूर्ण व प्रासंगिक हैं । उनके विचारों को जीवन में आचरण करने का प्रयास करना चाहिये ।

दादी – मुन्नी देवी
जन्म दिनांक 18.2.1871
स्वर्गवास/ब्रह्मलीन 08.2.1972

बेबी तूने हुकारे बन्द कर दिये व कहानी बीच में छोड दी पर धर्म को जीवन में कभी मत छोडना

पिता – न्यायमूर्ति जे.पी जैन
जन्म दिनांक 15.11.1917
स्वर्गवास/ब्रह्मलीन 17.09.1975

विपरित परिस्थिति में भगवान पर भरोसे के साथ, दृढ निश्चय, आत्मविश्वास,संयम, धैर्य रखकर, मेहनत समर्पित भाव व एकाग्रता के माध्यम ये जीवन में अपने विवेक से निर्णय लेने पर लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है ।

माता – श्रीमती पुष्पा जैन
जन्म दिनांक 12.04.1922
स्वर्गवास/ब्रह्मलीन 19.07.1999

अपने व्यवहार व वाणी से जीवन में किसी को दुःख मत पहुचाना । साथ ही जीवन में क्षमाशील व अहसानमंद होने महत्वपूर्ण है ।

बहन–सरोज जैन जौहरी
जन्म दिनांक 20.06.1943
मृत्यु/ब्रह्मलीन 03.12.2022

आपके व्यवहार से लोगो की दुआऐं जितनी मिलेगी उतनी ही मन में शांति प्राप्त होगी व जीवन में सकून का अनुभव होगा ।

पत्नि–श्रीमती अरूणा जैन
जन्म दिनांक 28.07.1946
स्वर्गवास/ब्रह्मलीन 11.01.2017

जीवन में सुनने की आदत डालना बहुत जरूरी है । तथ्यों के आधार पर अपनी सूझबूझ व विवेक से ही सही निर्णय लिया जा सकता है ।

भाई–अनिल जैन
जन्म दिनांक 05.02.1952
स्वर्गवास/ब्रह्मलीन 30.06.2016

अगर आप स्वयं संयमित व अनुशासित जीवन व्यतीत करेंगे तो स्वास्थ्य रहने के साथ खुशहाल जीवन जी पायेंगे व अन्य भी प्रेरित होंगे ।

बहनोई सा.–डॉ.सुधीर घीया
जन्म दिनांक 26.09.1943
स्वर्गवास/ब्रह्मलीन 07.03.1995

पढाई के साथ सकारात्मक सोच व अच्छा व्यवहार होना जरूरी है । अच्छी समझदारी व स्वअनुशासन खुशहाल जीवन का सार है ।

ससुर साहब- ईजि.लक्ष्मीचन्द जैन
जन्म दिनांक 28.10.1920
स्वर्गवास/ब्रह्मलीन 02.08.2010

ईमानदारी, मेहनत, संमर्पित, नैतिकता व प्रेम भाव से काम करने वाले ही सबका मन मोह लेते है। यही जीवन कर मूल मंत्र है।

सासू माँ- श्रीमती लक्ष्मी देवी
जन्म दिनांक 01.08.1927
स्वर्गवास/ब्रह्मलीन 28.07.2018

हर एक की निस्वार्थ मदद करने से मन प्रसन्न रहता है व आत्मा को संतुष्टि मिलती है।

साले साहिब- निशिथ जैन
जन्म दिनांक 20.11.1950
स्वर्गवास/ब्रह्मलीन 28.04.2021

चैलेज व विपरीत परिस्थिति से ही आदमी निखरता है। अपने व्यवसाय के अलावा नई चीज सीखने पर आनन्द, ज्ञान, नये तजुर्बे व सकारात्मक दृष्टिकोण से जीवन में उर्जा बढती है।

साढू भाई- राजकुमार जैन
जन्म दिनांक 03.02.1957
स्वर्गवास/ब्रह्मलीन 08.08.2020

अनजान व कमजोर की मदद करने से वो आदमी की इन्सानियत व सवेंदशीलता दिखती है मानवीय गुण है जो मनुष्य के अन्दर की मनुष्यता को परिभाषित करती है।

- **Life is like a sea,**
  we are moving without end nothing stays with us.
  what remains is just
  the memories of some people
  who touch us as wayes.

- **Soft attitude always creates**
  strong relations.

- **Calmness is a human's superpower.**
  The ability to not overreact or take things
  personally keeps your mind clear and your
  heart at peace.

- **Life is as Simple as**
  we allow it to be.

- **Take risk, if you win**
  you will be happy if you lose.
  you will be wise

- **Strong people stand up**
  for themselves, but
  stronger people
  stand up for others

- **Moments become memories, spend**
  them with good people.

- **Appreciate good people. They are hard to find**

Published by :
Gaurav Jain Advocate ● Mudit Jain
R-3, Tilak Marg, C-Scheme, Jaipur-302005
Mobile : 9828016558, 9414066665
e-mail: nkjainaruna@gmail.com

website : justicenagendrakjain.com
justicenagendrakjainfountrust.com